15वें डेल्ही सस्टेनेबल डेवलपमेंट समिट 2015 में "स्थायी विकास और जलवायु परिवर्तन" पर हुई चर्चा

नई दिल्ली, 17 फरवरी । राज्य प्रमुख व नोबेल विजेता और विशेषज्ञ 15वे डेल्ही सस्टेनेबल डेवलपमेंट समिट 2015 में विश्व के प्रमुख मुद्दों और उनके समाधान खोजने हेतु एकत्रित हुए। द एनर्जी एंड रिसोर्सेस इंस्टिट्यूट के इस आयोजन ने "स्थायी विकास और जलवायु परिवर्तन" जो की इस वर्ष के आयोजन का प्रमुख विषय है, पर संवाद के लिए एक विशिष्ट मंच प्रदान किया। डेल्ही सस्टेनेबल डेवलपमेंट समिट 2015 का महत्व इसलिए बढ़ जाता है क्योकि इसमें विकास के कई मुद्दे मूर्त रूप लेंगे। संयुक्त राष्ट्र साधारण सभा द्वारा सितम्बर 2015 में नए लक्ष्य निर्धारित किये जाने है और जलवायु समझौता वार्ता (काफ्रेस ऑफ़ पार्टीज) जो इस वर्ष में पेरिस में होना है। द एनर्जी एंड रिसोर्सेस इंस्टिट्यूट के मुख्य निदेशक डॉ. आर के पचोरी, ने बताया कि, आई.पी. सी. की रिपोर्ट ने से पता चला है कि यदि हमने त्वरित कार्यवाई नहीं की तो इसके भविष्य में इसके परिणाम विनाशकारी होगें। परन्तु जलवायु परिवर्तन मिश्रित लाभ के अवसर भी प्रदान करती है स्वच्छ और वहनीय ऊर्जा जैसे सौर एवं वायु ऊर्जा में निवेश ग्रीनहाउस गैस के उत्सर्जन को नियंत्रित कर सकता है और स्वच्छ परिवहन व्यवस्था जैसे रेल और साइकिल वायु प्रदूषण से जन स्वास्थ्य को सुधार सकते है। डेल्ही सस्टेनेबल डेवलपमेंट समिट और द एनर्जी एंड रिसोर्सेस इंस्टिट्यूट को पुरे विश्व से मिलने वाले सहयोग की पुष्टि करता है । श्री प्रकाश जावड़ेकर, माननीय राज्य मंत्री-पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन, ने बताया कि विकास की व्यवस्था में कई जगह असमानता हो रही है और इस मुद्दे को इस विकास वार्ता में उठाया जाना चाहिए। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के अनुसार "जलवायु परिवर्तन की वजह से बढ़ते दबाव में हम प्रभावित हो रहे है और आने वाली पीढियों के जीवन को सुधारना हमारा दायित्व है। हम किन एनर्जी के रास्ते को अपना चुके है, हमने नवीनकरणीय ऊर्जा की अपनी वचनबद्धता को बढ़ाया है और स्मार्ट शहरों की शुरुआत की है।" श्री जावड़ेकर ने कहा कि "वायु प्रदुषण ने सभी देशो को प्रभावित किया है। स्वच्छ वायु सबका जन्मसिद्ध अधिकार होना चाहिए और हमें स्वच्छ वायु, स्वच्छ जल और ऊर्जा की दिशा में कार्य करना चाहिए।" श्री सुरेश प्रभु, माननीय रेल मंत्री ने कहा कि "जलवायु परिवर्तन एक वैज्ञानिक सत्य है यदि हमने देर करी तो परिणाम घातक होंगे। जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए हमें संगठित प्रयास करने चाहिए। हमें न्यून कार्बन अर्थव्यवस्था की तरफ बढा चाहिए जिसमे की नए रोजग़ार के अवसर भी उपलब्ध होंगे।" कैलिफ़ोनिय्या के पूर्व गवर्नर एवं क्र 20 के संस्थापक अध्यक्ष श्री अर्नील्ड स्च्वार्जनेगर ने कहा की "जलवायु परिवर्तन कोई वैज्ञानिक कल्पना नहीं है हमें इससे निपटने के सर्वसंभव प्रयास करने चाहिए। भारत जलवायु परिवर्तन के संवाद में प्रमुख भूमिका निभाएगा जिसक लिए हमें झिझक नहीं बल्कि प्रयास की ज़रूरत है।" आंतरिक वायु प्रदुषण जैसी समस्याओ के लिए हमें नवीनतम् समाधान खोजने चाहिए। द एनर्जी एंड रिसोर्सेस इंस्टिट्यूट के लाखो जीवन को प्रकाशवान करने के अभियान ने नए हल सुझाये है जिसमे की सौर ऊर्जा से चलने वाले लैटर्न है न की केरोसिन से चलने वाले लैंप। फ्रांस के विदेश मंत्री एवं अंतर्राष्ट्रीय विकास मंत्री एवं पूर्व प्रधानमंत्री एवं काफ्रेस ऑफ़ पार्टीज के अध्यक्ष श्री लौरेंट फैबियस ने अपने उद्घाटन सम्बोधन में कहा कि "वर्ष 2015 जलवायु परिवर्तन एवं वहनीय विकास की दिशा में एक निर्णायक पड़ाव होगा। वैज्ञानिक समुदाय अपना कार्य कर चूका है। अब सरकारों और कम्पनियो को अपना कार्य करना चाहिए। क्योकि यदि आपने जलवायु अवरोध को स्वीकार किया तो विकास भी अवरुद्ध होगा।" सस्टेनेबल डेवलपमेंट आउटरीच विभाग द एनर्जी एंड रिसोर्सेस इंस्टिट्यूट के निदेशक डॉ अन्नपूर्णा वेंचेस्वरन, ने कहा कि, " डेल्ही सस्टेनेबल डेवलपमेंट समिट सबसे पहला मंच है जो पर्यावरणात्मक एवं विकासात्मक समस्याओ की विवेचना करता है और इसके हर एक कदम का हिस्सा बनने के बाद इतना कहा जा सकता है की ये यात्रा बहुत रोमांचकारी रही है।" एक विशेष सत्र में नोबेल विजेता युआन तसेह ली, जो कि एमेरिटस के अध्यक्ष एवं एकेडेमिया सिनिका के शोधार्थी है, ने कहा की "जलवायु परिवर्तन उपग्रह का सबसे बड़ा दुश्मन है जिसका उपचार सिर्फ वैज्ञानिक समुदाय को ही नहीं बल्कि सभी को करना होगा। सफल होने के लिए हम सभी को संगठित होकर काम करना होगा। जनसँख्या और उपभोग की अधिकता ने पृथ्वी को कई खतरों से भर दिया है और इस संकट के प्रति हमें जागना होगा।" डॉ कैलाश सत्यार्थी, नोबेल विजेता और बचपन बचाओ आंदोलन के संस्थापक और बाल श्रम के धुर विरोधी ने कहा की "बड़ी संख्या में लड़कियों को आई. एस. आई. एस. ने अगवा कर के बंदी बना लिया है। उनके पालकों के अनुसार उन्होंने बच्चो को यूनिफार्म में भेजा और वो कफ? में वापस आये। हम ऐसी दुनिया में रह रहे है जहां बच्चो को जानवरों की तरह बेचा जाता है और कई बार जानवरों से भी बुरी हालत में। बच्चो को सपने देखने से रोकने से बड़ा अपराध कुछ नहीं है।" ऊर्जा एवं संसाधन संस्थान द एनर्जी एंड रिसोर्सेज इंस्टिट्यूट वर्ष 2001 से डेल्ही सस्टेनेबल डेवलपमेंट समिट का वार्षिक आयोजन करता है जो की वहनीय विकास के हर पहलु पर ज्ञान के आदान प्रदान को एक अंतर्राष्ट्रीय मंच देता है। विगत 14 वर्षों में यह सर्वप्रथम संस्थान के रूप में स्थापित हुआ है। यह आयोजन कई राज्य प्रमुख, विचारको, नीति निर्धारकों और समुदाय के प्रतिष्ठित लोगों को बड़ी मात्रा में एकत्रित करता है। आज तक इस सम्मलेन ने 36 से ज्यादा राज्य प्रमुख, 50 से अधिक देशों की मेज़बानी की है। सम्मलेन ने महत्वपूर्ण योगदान दे के राजनीती, शिक्षाए अर्थव्यवस्था और सामाजिक लोगो को सस्टेनेबल डेवलपमेंट के मुद्दो से जोड़ा है। द एनर्जी एंड रिसोर्सेज इंस्टिट्यूट एक स्वतंत्र और लाभ निरपेक्ष शोध संस्था है जो की ऊर्जा, पर्यावरण और वहनीय विकास के हर पहलु से गहराई से जुडी है। पर्यावरण के मित्रतापूर्ण समाधान से ले के ग्रामीण ऊर्जा समस्याओ और भारत के तेल एवं गैस क्षेत्र के विकास एवं वैश्विक जलवायु परिवर्तन मुद्दो, वन संरक्षण के प्रयासों से ले केए शहरी परिवहन और वायु प्रदुषण, भारतीय उद्योगो में ऊर्जा की दक्षता को बढ़ाने तक संस्था का प्रयास विश्व को रहने लायक जगह बनाना है। द एनर्जी एंड रिसोर्सेज इंस्टिट्यूट की समस्त गतिविधिया स्थानीय और राष्ट्रिय स्तर पर रणनीतिया बनाना और वैश्विक ऊर्जा और पर्यावरण से सम्बंधित समस्याओ को हल करना है। डॉ आर के पचोरी के नेतृत्व में, जो की नोबेल पुरस्कार विजेता जलवायु परिवर्तन संस्था, ब्रुक्कष्ट के अध्यक्ष भी है द एनर्जी एंड रिसोर्सेज इंस्टिट्यूट एक उत्कृष्ट संस्थान के रूप में उभरा है। और विश्व के राजनीतिज्ञए नीति निर्धारक और कॉर्पोरेट क्षेत्र के बीच एक वैश्विक छाप छोड़ी है।